Book Title: उपभोग संस्कृति, बाज़ार एवं बचपन के विषय में.....

Reenu Gupta, Aditya P. Tripathi, Preeti Shukla

Shyam Lal College (E) Innovation Project 102

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दिनेश सिंह द्वारा प्रदत्त इस इनोवेशन प्रोजेक्ट का प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों में शोध अभिरुचि उत्पन्न करना रहा है ताकि उनका ज्ञान सिर्फ क्लासरुम तक सीमित न होकर व्यावहारिक एवं यथार्थपरक हो। उस उद्देश्य की पृष्ठभूमि में "उपभोग संस्कृति, बाज़ार और बचपन" पर शोध कार्य करते हुए भारतीय परिवेश में बाज़ार की बचपन से बढ़ती हुई अपेक्षाओं से हमारी १ वर्षीय बच्ची से इनोवेशन टीम का साक्षात्कार हुआ। बचपन की खोज विषयक इस प्राथमिक शोध के अंतर्गत नंदिता का चयन भारतीय बचपन को प्रतिबिंबित करने के लिए किया गया है।

आज बच्चों के जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जिस पर बाज़ार की पकड़ न हो। वैश्वीकृत भारत में बढ़ते हुए उपभोगवाद ने एक तरफ जहाँ बच्चों में विवेकपूर्ण तथा तार्किक निर्णय लेने की क्षमता का विकास करते हुए बेहतर जीवन शैली प्रदान करने का दावा प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी तरफ इस परिवर्तन के कारण वैश्विक पटल पर भी बच्चों में उत्तेजना, क्रोध, हिंसा, अवसाद, तनाव, अशांति व अव्यवस्था जैसे शारीरिक एवं मानसिक विकार तेज़ी से पनप रहे हैं।

उपभोग संस्कृति एवं बाज़ारवाद के प्रमुख संवाहक के रुप में आधुनिक तकनीक, सूचना एवं संचार-क्रांति, नवीन उत्पादों की श्रृंखलाओं तथा नित-नए अवतार में सामने आ रहे विज्ञापनों ने बचपन की दुनिया को बिल्कुल बदल दिया है। अबोध बाल मन आकर्षक विज्ञापनों के माध्यम से उपभोगवाद के शिकंजे में दिनोंदिन जकड़ता जा रहा है जोकि आत्म-मंथन एवं गहन-चिंतन का विषय है।

उपरोक्त साक्ष्यों एवं तथ्यों के आलोक में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त इस प्रोजेक्ट पर शोध कार्य करते हुए भारतीय परिप्रेक्ष्य में (विशेषकर दिल्ली एवं मुंबई के संदर्भ में) **बचपन कहाँ है ? और कैसा है ? की वास्तविकता से पाठकों को अवगत कराने की दिशा में यह पुस्तक एक पहल है।**